के.बी.एस प्रकाशन

मातृभाषा.कॉम

वैचारिक महाकुम्भ

मातृभाषा को समर्पित साझा काव्य संग्रह

www.matrubhashaa.com

मातृभाषा.कॉम
वैचारिक महाकुम्भ

संपादन

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

सह संपादन

डॉ. प्रीति सुराना

अनेकता में एकता का प्रतीक

के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN-978-93-86716-29-3

के.बी.एस. प्रकाशन

मुख्य कार्यालय :- 18/91-ए, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007
शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटवेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301
दूरभाष :- 9871932895, 9868089950, 7532868696
Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in
e-mail :- kbsprakashan@gmail.com

●

मूल्य : 100.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2018 © मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संकलनकर्ता :- अजय जैन 'विकल्प'
आवरण :- मृदुल जोशी
तकनीकी सहयोगी :- चेतन बेन्डाले
सहयोगी संस्थान :- सेन्स टेक्नोलॉजी
मुद्रक :- सी.पी. प्रिन्टर नई दिल्ली

'MatraBhasha.com'
by MatraBhasha Unnayan Sansthan

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समर्पण

हिन्दी है अभिमान राष्ट्र का, हिन्दी स्वाभिमान है

जब एक राष्ट्र-एक भाषा के स्वर मुखर हो रहे हों, साहित्य सृजन में कई विधाएँ दम तोड़ रही हों, साथ ही राजनैतिक मंशा भी हिन्दी को राजभाषा तक ही सीमित मान रही हो जबकि हिन्दी जनभाषा से संपर्क भाषा और यहाँ तक कि राष्ट्रभाषा की तरफ़ बढ़ कर राष्ट्र की सांस्कृतिक अखंडता को सहेजने का दंभ भर रही है, ऐसी स्थिति में मातृभाषा.कॉम का एक प्रयास है जहाँ हिन्दी के स्वर को क्रांति का शंख अर्पण कर हिन्दी के स्वाभिमान से राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु प्रतिबद्धता घोषित की है।

हम हिन्दीभाषी जन को मिलकर हिन्दी की अखंडता और अक्षुण्णता के लिए उत्तरदायी होकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए अग्रसर होना होगा। एक अभियान हिन्दी की सार्थकता के लिए, जिसमें हिन्दी की विधाओं के संरक्षण और साथ ही नवोदित और स्थापित रचनाकारों के सृजन को सहेजकर जनमानस के लिए सहज रूप से उपलब्ध करवाने के प्रयास में मातृभाषा.कॉम ने अग्रणी भूमिका निभाई है। इसी तारतम्य में एक प्रयास है जिसमें हिन्दी के रचनाकारों की हिन्दी के प्रति अभिव्यक्ति जो मातृभाषा में, मातृभाषा के लिए और मातृभाषा नाम से ही सृजन को सहेज कर पाठकों तक उपलब्ध करवाने का प्रयास किया है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पाठकों को हिन्दी प्रेम और आदर के साथ हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनने के लिए प्रारंभ हुए आंदोलन को बल मिलेगा।

जय हिन्द-जय हिन्दी
मातृभाषा.कॉम परिवार

क्या आप बनना चाहते हैं
'भाषा सारथी'?

क्योंकि :-

1. आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें जुटकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा।
2. 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा।
3. हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को आय दिलवाने में मदद करनी होगी।
4. हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाज़ार मूलक भाषा बनानी होगी।
5. हिन्दी साहित्य को आम जन तक पहुँचाना होगा।
6. हिन्दी भाषियों की मदद करनी होगी।
7. हिन्दी के प्रचार हेतु अपने क्षेत्र में हिन्दी प्रेमियों का समुच्चय बनाकर प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होगा।

यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते हैं तो आज ही जुड़ने के लिए 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान', 'हिन्दी ग्राम', 'मातृभाषा.कॉम' व 'अन्तरा-शब्दशक्ति' से सम्पर्क करें।

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
अध्यक्ष- 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान'
संस्थापक- 'हिन्दी ग्राम'
सह संस्थापक- 'मातृभाषा.कॉम'
प्रधान सम्पादक- 'ख़बर हलचल न्यूज़'

डॉ. प्रीति सुराना
उपाध्यक्ष- 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान'
सह-संस्थापक- 'हिन्दी ग्राम'
प्रबंधन संपादक- 'मातृभाषा.कॉम'
संस्थापक- 'अन्तरा शब्दशक्ति'

अनुक्रमांक

1. डॉ.अर्पण जैन 'अविचल' 09
2. अजय जैन 'विकल्प' 11
3. आरती जैन 12
4. अनिता मंदिलवार 'सपना' 14
5. दुर्गेश कुमार मेघवाल 16
6. दशरथ दास वैरागी 18
7. सोनाली नरगुंडे 20
8. डॉ. नीलम कौर 22
9. डॉ. उषा कनक पाठक 24
10. इन्द्रपाल सिंह 26
11. कार्तिकेय त्रिपाठी 'राम' 27
12. मनोरमा रतले 29
13. मनोरमा जोशी 31
14. मीना गोदरे 'अवनि' 33
15. नरेन्द्रपाल जैन 35
16. प्रमोद बाफना 37
17. प्रेरणा सद्रे 39
18. पुखराज छाजेड़ 41
19. राजेश शर्मा 'पुरोहित' 43
20. रवि रश्मि 'अनुभूति' 44
21. अरविन्द ताम्रकार 'सपना' 45
22. सुषमा दुबे 46
23. तृप्ति तोमर 47
24. टीना जैन 48

25. वासिफ़ काजी 50
26. विजयलक्ष्मी जांगिड़ 51
27. कुसुम सोगानी 52
28. मनोज कुमार सामरिया 'मनु' 54
29. रिखबचंद राँका 'कल्पेश' 56
30. शरद कौरव 'गम्भीर' 57
31. डॉ. सरिता नारायण 59
32. दीपा जायसवाल 61
33. डॉ. प्रीति सुराना 63

डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'
इंदौर (मध्य प्रदेश)

'हिन्दी है मेरे राष्ट्र की भाषा'
(तर्ज- चन्दन है मेरे देश की धरती)

हिन्दी है मेरे राष्ट्र की भाषा,
हिन्दी निज अभिमान है,
हर स्वर व्यंजन ताकत इसकी,
अक्षर अक्षर जान है...

हर शब्द जीवन का तारक,
हर अक्षर उपकारी है।
जहाँ पंत और बने निराला,
जहाँ महादेवी भी प्यारी है।
जहाँ गीतों में राम-रहीम हैं,
हिन्दी मेरी जान है।
हर स्वर व्यंजन ताकत इसकी,
अक्षर अक्षर जान है...

जहाँ भुजाएँ गद्ध से बनती,
छन्द जहाँ कल्याणी है।
जन-जन गाए गीत इसी के,
जन-गण-मन की वाणी है।

प्रेम जहाँ रंग देता स्वर को
भारत भूमि की शान है।
हर स्वर व्यंजन ताकत इसकी,
अक्षर अक्षर जान है...

जिसमें रच-बसकर, पढ़कर,
बनता राष्ट्र महान है।
जहाँ गीत में गुंजन इसका,
संस्कृत इसके प्राण है।
जीवन की है प्राणसुधा यह,
भारत का यशगान है।
हर स्वर व्यंजन ताकत इसकी,
अक्षर अक्षर जान है...

हिन्दी है मेरे राष्ट्र की भाषा,
हिन्दी निज अभिमान है।
हर स्वर व्यंजन ताकत इसकी,
अक्षर अक्षर जान है...

कैसे सम्मान होगा

अब तो समर में ही प्राणदान होगा,
अब तो क्रान्ति का ही आह्वान होगा,
या तो इस पार ही हमारा श्मशान होगा,
या हिन्दी का अखण्ड स्वाभिमान होगा।

भारतभूमि पर ही है हिन्दी को खतरा,
इससे ज़्यादा और क्या तूफ़ान होगा,
अब भी न जागा हिन्द का निवासी,
तो अब कैसे हिन्दुस्तान महान होगा!

गुप्त, चतुर्वेदी महादेवी और निराला,
सब तो समर में ही लड़ गए,
बचा न सके हम यदि अस्मिता माँ की,
तो शेष अब क्या व्यवधान होगा।

राजनीति की कलुषित चालों ने,
भाषा के अस्तित्व को कुचल डाला,
संदल के जंगल में सर्पों का मेला,
इससे बड़ा तीर और क्या संधान होगा!

राष्ट्रभाषा के सूर्य की तपन है ज़रूरी,
आन्तरिक विखण्डन की शीत छा रही,
सत्तामद में सारथी ही तो डूब रहे हैं,
भारत भूमि का शेष क्या अपमान होगा!

समाज से संस्कार सिंचन गौण है,
परिवार से वृद्धों की मजबूरी मौन है,
माँ-बाप अंग्रेज़ियत की ओर भाग रहे,
विखण्डन का शेष क्या परिणाम होगा!

संग्राम की आवश्यकता है अधिक,
समर के व्याकरण की ज़रूरत है,
सेवा के रणबांकुरों का ही महत्त्व है,
वर्ना माँ का शेष क्या अरमान होगा!

राष्ट्र के सच्चे सचेतक मौन बैठे हैं,
माँ भारती की अश्रुधार के आगे,
हिन्दी के लिए तुम न जागे 'अर्पण',
तो भूमंडल में शेष क्या सम्मान होगा!

अजय जैन 'विकल्प'
इंदौर (मध्य प्रदेश)

गंगाजल है हिन्दी

सब भाषाओं में गंगाजल है हिन्दी,
भारत माँ का आँचल है हिन्दी।

जिह्वा, कंठ व अधरों में है बसती,
सचमुच गुणी भाषा है हिन्दी।

अल्प, पूर्ण विराम इसके गहने,
कुंदन-सा आभूषण है हिन्दी।

सरलता से छूती है हर मन को,
छंद, दोहा का भंडार है हिन्दी।

मेरे हिन्दुस्तान की संस्कृति है,
मान-सम्मान की भाषा है हिन्दी।

करोड़ों जन का रोज़ हिस्सा है ये,
सबकी रगों में लहू है हिन्दी।

संस्कार, सभ्यता दर्शाती है ये,
दादा का पुश्तैनी घर है हिन्दी।

ये माँ है, बस भाषा ही मत मानिए,
जीवन की आस, साँस है हिन्दी।

आईए हिन्दी का सम्मान करें,
क्योंकि, भाषा की खान है हिन्दी।

इसे ही बोलकर गुणगान करें,
हिन्दी को रख मस्तक बिंदी।

इसकी फ़िक्र करें, सदा ज़िक्र करें,
अभिव्यक्ति में याद रखें हिन्दी।

साहित्य का ज्ञान, पसंद है हिन्दी,
निराला, तुलसी, सूर है हिन्दी।

आरती जैन
डूंगरपुर (राजस्थान)

हिन्दुस्तान की आन है हिन्दी

हिन्दुस्तान की आन है हिन्दी,
हिन्दुस्तान की शान है हिन्दी।
हिन्दुस्तान का प्रतीक है हिन्दी,
हिन्दुस्तान का गौरव है हिन्दी।

मेरा मन बेचैन होता है,
जब हिन्दी पर कोई रोता है।

जिस माँ की कोख से जन्म लिया,
क्या कोई उसको कोसता है।

मत करो ऐसा, मत करो ऐसा,
यह अपमान है हिन्दी का,
यह अपमान है मेरे देश का।

माना अंग्रेज़ी पूरे विश्व में है फैली,
पर अंग्रेज़ी को जनने वाली है हिन्दी।

हिन्दी को अबला समझने वालों,
अपनी सोच को बदल डालो...
अपने कटु शब्द मिटा डालो।

शिकागो की सभा से
अमेरिकी संसद तक,
गवाह है कि अब हिन्दी,
किसी पहचान की मोहताज नहीं।
पूरे विश्व की भाषाओं की,
इकलौती सरताज है हिन्दी।

अंग्रेज़ी

अंग्रेज़ी गुलामी का सृजन है,
हिन्द वतन पर अंग्रेज़ी बदन है।
अंग्रेज़ी से चलता हिन्दी सदन है,
हिन्दी दिवस पर ही हिन्दी को नमन है।
मैकाले की भाषा का आज भी बन्धन है,
अपने घर में हिन्दी करती क्रन्दन है।
अंग्रेज़ी माध्यम को प्रथम वंदन है,
हिन्दी देश बना लंदन है।
सितंबर में होता हिन्दी पर मंथन है,
काग़ज़ों में होते हिन्दी पर जतन है।
सवाल है मेरा- क्या ये मेरा हिन्दी वतन?

अनिता मंदिलवार 'सपना'
अंबिकापुर (छत्तीसगढ़)

हिन्दी

हिन्द देश की अपनी हिन्दी भाषा।
हमारे जीवन की है इसमें परिभाषा॥
कला और विज्ञान से है समाहित।
इसमें भरी हुई ज्ञान पिपासा॥
हिन्दी भाषा की हम पहचान गढ़ें।
मेरे मन की है यही अभिलाषा॥
मुखरित हो उर-अंतस के भाव हमारे।
पल्लवित होकर बन जाए जनभाषा॥
वेद-ऋचाएँ, भगवत-गीता पढ़ो 'सपना'।
आगे बढ़ने की जगाती है आशा॥

हिन्दी हमारा गौरव

राष्ट्रभाषा हिन्दी का, अब है मान बढ़ाना,
हमको जन-मानव तक है, इसको भी पहुँचाना।
मंज़िल मिल ही जाएगी, है अब क़दम बढ़ाना,
अब बिना रुके, बिना झुके, हमको मंज़िल पाना॥
व्यवहार मानवीय हो, संबंध आत्मीय हो,
यादगार हो व्यक्तित्व, हमारी पहचान हो।
महत्त्व देकर इसको है और महान बनाना,
केवल सोचना नहीं है, इसे अमल में लाना॥
भाषा हमारी ऐसी हो, हमको बस जोड़े,
आपसी भेदभाव मिटा, सभी बेड़ियाँ तोड़े।
विश्वभाषा बने ये अब, सबको है अपनाना,
लक्ष्य बनाकर है, सिद्धांत भी बनाना॥

दुर्गेश कुमार मेघवाल
बूंदी (राजस्थान)

हिन्दी शतावली

मन मन्दिर की आरती हिन्दी।
भारत की माँ भारती हिन्दी॥

हिन्दजनों को तारती हिन्दी।
ज्ञानीजनों की सारथी हिन्दी॥

शब्द नए-नए जारती हिन्दी।
शब्दकोश को सारती हिन्दी॥

सर्वरूपों को धारती हिन्दी।
जग भाषा में उदारती हिन्दी॥

नित-नए शब्द ढालती हिन्दी।
आप विद्वता विशालती हिन्दी॥

खुशबू भाषा की मालती हिन्दी।
नवयुग को सम्भालती हिन्दी॥

व्योम पताका विजया हिन्दी।
संस्कृत की तनया है हिन्दी॥

मात जसोदा जूं मइया हिन्दी।
कड़क धूप में छइयां हिन्दी॥

बात-बात नई बतिया हिन्दी।
नई पौध की तितिया हिन्दी॥

चमक-चाँदनी रतिया हिन्दी।
गीतकारों की छमियां हिन्दी॥

रसिकों की मनबसिया हिन्दी।
चल-चित्रों का रंगिया हिन्दी॥

चंग-मस्तों की भंगिया हिन्दी।
शुक्ल-हजारी का रसिया हिन्दी॥

बुद्धिजनों की सिद्धिया हिन्दी।
स्वर्ण-स्वप्नों की निंदिया हिन्दी॥

भारतमाता की बिंदिया हिन्दी।
कुमार की जीव-जिन्दिया हिन्दी॥

हिन्दजन की जान है हिन्दी।
स्नेह-सुरा का पान है हिन्दी॥

नागरी-जन जुबान है हिन्दी।
चेहरों की मुस्कान है हिन्दी॥

भाषाओं का मान है हिन्दी।
ब्रह्मा का भी ज्ञान है हिन्दी॥

आत्मज्ञान का भान है हिन्दी।
सिद्धता और विज्ञान है हिन्दी॥

शब्द-ज्ञान की खान है हिन्दी।
गीत-सुरों का गान है हिन्दी॥

हिन्द का स्वाभिमान है हिन्दी।
भारत-संघ संविधान है हिन्दी॥

जग का तो अरमान है हिन्दी।
समझो तो अब शान है हिन्दी॥

जन-जन की पहचान है हिन्दी।
तन-मन-धन सह प्राण है हिन्दी॥

सब साँसों की श्वास में हिन्दी।
जन-जन के विश्वास में हिन्दी॥

बीच आम और ख़ास में हिन्दी।
दिनकर जग-प्रकाश में हिन्दी॥

परसाई परिहास में हिन्दी।
खड़ी बोली इतिहास में हिन्दी॥

भिन्न-बोली उजास में हिन्दी।
फूल-फूल की बास में हिन्दी॥

राष्ट्रीयता के विकास में हिन्दी।
सरकारों के प्रयास में हिन्दी॥

प्रशासन के प्रश्वास में हिन्दी।
डी.कुमार के तन-श्वास में हिन्दी॥

काव्य की अभिलाष में हिन्दी।
साहित्य कुछ ख़ास में हिन्दी॥

सप्त-सुर का इकतार भी हिनदी।
जग-प्रभु का सत्कार भी हिन्दी॥

सात समन्दर उस पार भी हिन्दी।
भव-सागर जनउद्धार भी हिन्दी॥

बच्चों का बचपन भी है हिन्दी।
युवकों का युवपन भी है हिन्दी॥

मान उम्र पचपन का भी हिन्दी।
भाव रखे स्वपन का भी हिन्दी॥

नवरस संग इक रस भी है हिन्दी।
कई पुण्यों का जस भी है हिन्दी॥

हिन्दजन के मन-बस भी हिन्दी।
कई बोलियों का निष्कर्ष भी हिन्दी॥

भारत भाषा सर्वस्व भी है हिन्दी।
वीर-विजय ओजस्व भी है हिन्दी॥

कवि चन्द का रास भी है हिन्दी।
अमीर खुसरो ख़ास भी है हिन्दी॥

घन, सेना, पदम की आस भी है हिन्दी।
कबीर, रहीम, तुलसीदास भी है हिन्दी॥

रामचरित-मानस भी है हिन्दी।
सत्य का सारस भी है हिन्दी॥

जिन (जैन) अहिंसा जस में भी हिन्दी।
परम-विवेक नस-नस में भी हिन्दी॥

भारतेंदु सन्मति भी है हिन्दी।
काल-चक्र सद्गति भी है हिन्दी॥

द्विवेदी की 'सरस्वती' भी हिन्दी।
जायसी, मन, पद्मावती भी हिन्दी॥

प्रेम (प्रेमचन्द) से बढ़ प्रमाद भी है हिन्दी।
शंकर (जयशंकर) सम प्रसाद भी है हिन्दी॥

मीरा, वर्मा, चौहान भी है हिन्दी।
अज्ञेय, निराला शान भी है हिन्दी॥

दिनकर, गुप्त की जान भी है हिन्दी।
मैथिली, माखन मान भी है हिन्दी॥

अब गूगल-फ़ेसबुक पर भी हिन्दी।
मेल-व्हाट्सएप सब हिन्दी-हिन्दी॥

माउस, की-बोर्ड, कम्प्यूटर हिन्दी।
टैब, स्मार्ट और प्रिंटर हिन्दी॥

दृढ़ता अब जग उत्थान ले हिन्दी।
जी कर अब स्वाभिमान से हिन्दी॥

अब तो मिटा अज्ञान ले हिन्दी।
तुम बिन सब सुनसान ए हिन्दी॥

नवरचना कर सन्धान से हिन्दी।
ले जग में वरीयता स्थान ए हिन्दी॥

दशरथ दास वैरागी
खानखेड़ी (मध्य प्रदेश)

हमारी मातृभाषा हिन्दी

आओ हम हमारी
मातृभाषा हिन्दी का
सम्मान करें,
प्रतिदिन हम
सही उच्चारण कर
इस का गुणगान करें।
हिन्दी में,
हम लगाएं बिंदी
इसकी न कर चिंदी।
अक्सर हम,
लिखते समय हिन्दी
लगाना भूल जाते बिंदी।
बिंदी, हिन्दी के माथे का
सरताज है,
इसकी महानता का
बिंदी ही राज़ है।
हम हिन्दू,
हम हिन्दुस्तानी,
हम हिन्दवासी,
हम गर्व और नाज़ हैं॥

भाषा समय की मांग

समय की मांग है,
इसका सबको
ज्ञान है,
हम अपनी
मातृभाषा हिन्दी से
न्याय करें।
न कि हम कोई,
अन्याय करें।
सरल सुबोध है,
हमारी हिन्दी भाषा
पढ़ समझ लें,
अर्थ का न
अनर्थ निकले,
उच्चारण एवं
भावार्थ सही निकले।
माना कि,
हमारी संस्कृति, भाषा
भिन्न-भिन्न है
किन्तु हिन्दी में,
विभिन्न भाषा
समाहित हैं।
हम हिन्दी में
बोल-समझ लेते हैं,
यह गर्व की बात है
नहीं किसी भाषा पर,
कोई घात है।
फिर यहाँ कैसा,
हिन्दी का कोई
उपहास है,
यही, यहाँ हिन्दी के
बोलने, पढ़ने
समझने की बात है।
न कोई यहाँ
प्रतिघात है,
पते की बात है॥

सोनाली नरगुंडे

हिन्दी हमारी

हिन्दी हमारी।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।
दुनिया में सबसे न्यारी, प्यारी,
ज्ञान, धर्म और सत्य की सुजान,
हर भारतीय जिस पर बलिहारी।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

बसी है भारत के हर कण में,
सर्वविद्या की अधिकारी।
ईश्वर सम सुंदर कृति मानव की,
पवित्रता से पावन जन-जन की।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

रचे हैं विश्व कीर्तिमान जिसने,
भाषाओं की राज्ञी महारानी,
स्वाभिमान रख निज भाषा का।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

जन-जन की बनती यह बोली,
ज्ञान-ध्यान की बात बताती,
इससे पढ़ते-बढ़ते बनते ब्रह्मज्ञानी।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

आत्मरक्षा का पाठ पढ़ाती,
मुक्ति का मार्ग सिखाती,
जीवन के पथ पर बढ़ाती जाती।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

कथा, कहानी, निबंध की बानी,
सूचना समाज में जानी जाती,
ब्लॉगर्स की पसंद बनती।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

मेल-जोल की सीख सिखाती,
दुनिया को अपने में समाती,
सबमें घुलती-मिलती जाती।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

चेतना में अलख जगाती,
ख़ुशियों का संसार बसाती,
स्वदेशी की शक्ति बनती।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

संत-महंतों का ज्ञान सिखाती,
कला, विज्ञान की बात बताती,
तकनीक को भी नज़दीक लाती।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

प्राचीन, अर्वाचीन का मेल कराती,
कबीर, तुलसी की भरकर कलसी,
दिनकर, पंत तक चलती जाती।।
मधुर, मनोहर, सुंदर यह भाषा हिन्दी हमारी।

डॉ. नीलम कौर
उदयपुर (राजस्थान)

विविधता में एकता
हिन्दी की आवाज़

विविधता में एकता
हिन्दी की आवाज़ है,
ओज और शृंगार की
छाई छटा अद्‌भुत है।

भक्ति शक्ति की छटा
घनघोर रही है धरा पर,
ज्ञान, प्रेम की आसक्ति भई
निर्गुण निराकार, सगुण साकार रहा।

सिद्ध नाथों की योग-साधना
कबीर में लक्षित रही,
अद्वैत, विशिष्टाद्वैत में
सूर, तुलसी आत्मसात हैं।

शृंगार साहित्य घनानंद भये
गागर में सागर बिहारी भरे,
राष्ट्रप्रेम भारतेंदु, प्रसाद, निराला में

करुणा की गागर छलका रही,
महादेवी रहीं।

यथार्थ बोध कराएं प्रेमचंद-जैनेंद्र जी
यायावर कहलाए अज्ञेय हैं,
हाला का स्वाद बच्चन चखाए
प्रयोग करें नागार्जुन हैं।
शेष सफ़र बाकी है,
यूँ ही हिन्दी की सरिता
बहती जाती है।।

डॉ उषा कनक पाठक

मिर्ज़ापुर (उत्तर प्रदेश)

हिन्दी की माला

हिन्दी की माला,
अवधी ब्रज आदि बोलियों
के अद्भुत सुन्दर सुमनों से,
गुँथी हुई हिन्दी की माला,
भारत माँ के गले में
सुशोभित है।
इसी दीप्तिमयी माला से,
विश्व सुरभित है।
इसकी सुरभि विश्व बन्धुत्व व
शान्ति का संदेश दे रही है,
रक्तरंजित इतिहास को पुनः
रक्तिम होने से बचा रही है।
इसी माला में है उषा की लालिमा,
यही है विश्व शान्ति की प्रतिमा
विश्व में फैली हुई है,
आतंकवाद की यमराजी कालिमा।

इस माला की शक्ति है अपरिमित
इसी में है आनन्द एवं शत्।

इसी अहिंसात्मिका माला का लेकर सम्बल,
महात्मा गान्धी ने ब्रिटिश राज्य
के न डूबने वाले सूर्य को
कर दिया था निर्बल,

हिन्दी को नमन

जो कभी थी खड़ी बोली
आज राष्ट्रभाषा बनी हुई है,
भारतमाता की रसना से
बहने वाली रसवती भाषा बन
विश्व महिषी के क्रीट-सा चमक रही है,
जिसका उद्‌गम हो देव वाणी,
वह क्यों न होगी
गंगा-सी लोक कल्याणी,
इस भाषा ने अभिनेता,
अभिनेत्रियों व चल-चित्र
निर्माताओं के घर को
लक्ष्मी से भर दिया है,
उन्हें देव एवं देवी बना दिया है,
इस भाषा का उपासक ही
प्रधानमन्त्री बनता है,
साधु-सन्त-सन्यासी भी
इसकी सेवा से अपनी
मनोकामना पूर्ण करता है,
मैं इस भाषा को करती हूँ
सहत्र बार नमन,
इसके विविध पुष्पों की
सुरभि से सुरभित है
धरती व गगन।

इन्द्रपाल सिंह
आगरा (उत्तर प्रदेश)

हिन्दी भाषा

सुनो-सुनो, मैं सार बताऊँ,
हिन्दी का उपकार बताऊँ।
अपनी भाषा माँ हिन्दी का,
आओ आज दुलार बताऊँ।।
जिस दिन मैं जग में आया था,
डर से रोकर घबराया था।
सबसे पहले कर्ण पटल पर,
हिन्दी का स्वर टकराया था।।
तब जननी ने भी हिन्दी में,
मुझको किया था प्यार बताऊँ।
सुनो-सुनो मैं सार....।।
था एक वर्ष का अच्छा ख़ासा,
बोलने की जागी अभिलाषा।
शब्द कंठ से पहला निकला,
वो थी अपनी हिन्दी भाषा।।
पढ़ा-लिखा भी मैं हिन्दी में,
कितना किया उद्धार बताऊँ।
सुनो-सुनो मैं सार....।।

कार्तिकेय त्रिपाठी 'राम'
इंदौर (मध्य प्रदेश)

मंद-मंद मुस्काती हिन्दी

हिन्दी नारी की बिंदी है, उससे अंगार निकलने दो,
ये मन-से करुणा है हिन्दी, जन-जन का सपना है हिन्दी,
भावों की तूलिका है हिन्दी, बिटिया की लोरी है हिन्दी,
माँ-सी आहट है हिन्दी, फ़ौजी की भाषा है हिन्दी ,
हिन्दी जीवन का गहना है, बस ये ही तुमसे कहना है,
अब बारी है अपनेपन की, कुछ तेरे-मेरे कहने की,
इसमें एक रंग उतरने दो, जो सुर्ख हुआ था ख़ून कभी,
उसमें भी जीवन भरने दो, हिन्दी है तुलसी आँगन की,
जो जेठ में लगती सावन-सी, इसको गंगा-सी बहने दो,
अपने मन की भी कहने दो, हो शीर्ष शिखर हिमालय-सी,
उसको भी आसमां छूने दो,
न मन में कोई दुविधा हो, बस, प्रेम-प्यार की भाषा हो,
बस, कालजयी हो यह हिन्दी, इसे मंद-मंद मुस्काने दो।।

बात हिन्दी की करें हम

हिन्दी हमारे दिल में है,
उसको जुबां पर लाना है,
ये देश भी हिन्दुस्तां है,
ये हिन्दी में बताना है।
क्या हिन्दू हैं वे हिन्द के
हिन्दी जिन्हें आती नहीं,
बसती है एक बार दिल में,
फिर कभी जाती नहीं।
हिन्दी है मीठी शहद-सी,
ये जुबां को भाती है,
रस भरा शब्दों में जिसके,
हर मन को वो लुभाती है।
बात दिल तक है उतरती
जब मुखर होती है हिन्दी,
इसकी आभा है दमकती,
सूर्य के अंगार-सी।
हिन्दी तन की आत्मा है,
इसका भी शृंगार हो,
जब-भी बोले हम कहीं पर,
शब्दों का अंबार हो।
क्यूं हमें छोड़ा है तुमने,
रस्म की तन्हाइयों में,
अंत पर होता नहीं है,
जो जुड़ी गहराइयों में।
हिन्दी है जन-जन की भाषा,
हिन्दी है तन-मन की भाषा,
न हमें देना दिलासा,
कर रहे तुमसे ये आशा।
ये ही है संस्कृति हमारी,
संस्कारों से जुड़ी है,
धड़कनों में है धड़कती,
ये ही भाषा है हमारी।
बात हिन्दी की कही जब,
सब गले से मिल रहे,
होंठों पर मुस्कान लाकर
फूल-से वे खिल रहे।
आओ मनका फेर लें हम
हिन्दी के गुणगान का,
नाज़ हिन्दी पर करें हम,
बात हिन्दी में करें हम।
हिन्दी हमारे दिल में है...॥

मनोरमा रतले
दमोह (मध्य प्रदंश)

हिन्दी

आन-बान-शान-जान है हिन्दी,
वतन के लिए वरदान है हिन्दी।
कर लो कदर जवानों,
धनवान है हिन्दी।।

जात-बात-गात-मात है हिन्दी,
माँ-बेटे की मुलाकात है हिन्दी।
समझो ज़रा नादानों,
सौगात है हिन्दी।।

आस-रास-ख़ास-प्यास है हिन्दी,
जीवन की मिठास है हिन्दी।
मिट गए मिटाने वाले,
अरदास है हिन्दी।।

हिन्दी दिवस

अतिथि देवो भवः की परंपरा,
आज भी देश में कायम है,
पाहून के लिए...
पलक पांवड़े बिछाकर,
स्वागत की शृंखला जारी है।
पाहून बनकर आज हमारी
निजी भाषा पधारी है।
यजमान रूपी...
अंग्रेज़ी भाषा ने,
वेलकम रूपी मौन...
अभिवादन कर डाला है।
क्या करें....?
पेट की खातिर...
अपनों की भी,
जड़ काटनी पड़ती हैं।
तभी तो हम,
हिन्दी हैं हम...
हिन्दी हैं हम...
का...
दम भरते हुए
अंग्रेज़ी का गुणगान करते हैं।
गुड़ी पड़वा को छोड़,
हैप्पी न्यू ईयर मनाते हैं।
क्यों नहीं,
हम माँग करते...
ऐसे कम्प्यूटर की,
जिसमें सब-कुछ हिन्दी में हो।
पूरे मान-सम्मान के साथ,
बिना शरम के कम्प्यूटर में बैठ पाऊं।
न ग्लानि उठे,
न लजाऊं...
कि अंग्रेज़ी नहीं जानती,
जानती हूँ सिर्फ़ राष्ट्रभाषा।
जानती हूँ तो सिर्फ़ हिन्दी भाषा॥

मनोरमा जोशी
इंदौर (मध्य प्रदंश)

मातृभाषा अपनाएं

आओ मातृभाषा अपनाएं,
चलो नया संसार बसाएं,
नए जगत की नई कल्पना,
को आओ साकार बनाएं।

हृदय-हृदय में दीप जले जो,
अंतर का अज्ञान मिटा दे।
नयन-नयन में मातृभाषा के
सुन्दर मनहर स्वप्न सजा दे।
सबको दे विश्वास लक्ष्य का,
और सतत चलने का साहस।
ज्योति भर ऐसी जीवन में,
कभी न आए गहन अमावस।
फूट पड़े आत्मा का झरना,
गंगाजल-सी धार बहाएं,
आओ मातृभाषा अपनाएं।
रच डालेंगे चिर नूतन,
इतिहास क्रिया का संबल लेकर।
एक नया संघर्ष सृजन का,
होगा अब प्राणों में प्रतिपल।
यह संकल्प लेकर हम आएं,
आओ मातृभाषा अपनाएं।।

एकता का भाव

ए.
एक साँस एक आस,
विश्वास सबके एक हों,
मातृभाषा एक हो।

क.
कठिन कर्म नींव बने,
आवाज़ सबकी एक हो।

ताकत पुरुषार्थ बढ़े,
मातृभाषा साथ हो।
जीत मगर एक हो,
एकता के रंग में रंगे
विश्वमति एक हो।
वर्ण, रूप, भाषाएँ,
विविधता अनेक हैं।
पंचतत्व प्राण बने,
मानव सब एक हैं।
अपनी मातृभाषा ही नेक है।।

मीना गोदरे 'अवनि'
इंदौर (मध्य प्रदंश)

हिन्दी की दुर्दशा

धुलता रहा सुहाग पूछती रही बिंदी,
आज़ाद भारत ने उड़ा दी हिन्दी की चिंदी।
होती रही तिरस्कृत न पा सकी सम्मान,
हँसती रही गुलामी भाषा के दरमियान।
ओढ़ फैशन का बाना गिटपिट कर अंग्रेज़ी पहन बेड़ियाँ,
दुश्मनी की रो रही आज़ादी देख हिंगलिश भाषा अंग्रेज़ हँस रहा है,
देख हिंद की दुर्दशा शहीद रो रहा है।
दादा, काका-मामा हो गए अंकल,
मासी, बुआ, मामी हो गई आंटी,
सॉरी कहकर त्रुटि छिपा ली,
थैंक्स बोल एहसान कर दिया।
पिट गई हिन्दी की पाठशालाएं,
मिशनरियों का बोलबाला हो गया।
हिन्दी के माहौल में अंग्रेज़ी पढ़,
बेटा एक मखौल हो गया।
गिनती आती नहीं पचास तक,
हाईस्कूल में उत्तीर्ण हो गया।
हिन्दी की देखे पुस्तक तो,
सिर में तेज़ दर्द हो गया।
भाषण देकर नेता शासक,
अंग्रेज़ी के मोल बिक गया।
हिंदुस्तानी हिन्दी न जाने,
यह कैसा अँधेर हो गया!

हिन्दी की महिमा

संस्कृत की संतति संस्कारों की यह धानी,
इतिहास बताता है इसकी स्वर्णमयी कहानी।
अलंकार से युक्त अप्सरा जब बनकर ये आती,
वशीकरण कर ले इसकी शब्दावली निराली।।
वेदों और पुराणों की यही है द्रष्टा-सृष्टा,
राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत है राष्ट्रगीत की भाषा।
हिंदी के हैं गीत निराले, सारा जग है गाता,
युग परिवर्तन करने वाली यह है चिंतनधारा।।
ममता-प्यार की मीठी-सौंधी गंध इसी में आती,
संवाद कड़ी, माँ की लोरी ये दादी की कहानी।
सूर-तुलसी, मीरा-कबीर की है ये मधुरवाणी,
चुनौतियाँ आएं, इसका नहीं कोई सानी।।
महिमा जो इसकी पहचाने बन जाए वो ज्ञानी,
लाज जिसे आती है वह कैसा स्वाभिमानी।
नदी किनारे बैठा प्यासा, माँगे पानी-पानी,
हिंद देश का हिंदी न जाने कैसा हिंदुस्तानी।।
हर प्रदेश की बोली अपनी पाती रहे सम्मान,
पर अनिवार्य हो हिंदी पढ़ना सबको एक समान।
हिंदी के मान लिए कुछ नियमों का हो संधान,
एकता-अखंडता का तब हम गा पाएंगे गान।।

नरेन्द्रपाल जैन
उदयपुर (राजस्थान)

साहित्य

मन की संवेदनाओं से भरी किताब को देखा है,
हाँ... मैने साहित्य की धधकती आग को देखा है।
क़लम से निकलने वाली स्याही में,
कभी मायूस जज़्बातों में,
कभी मुस्कुराते शब्दों में,
ज़िन्दगी-सी बेतरतीब पंक्तियों में,
मैंने साहित्य को देखा है।
कभी गरीब के छप्परों में,
कभी भिक्षुक के खप्परों में,
कभी बेरोज़गारी की लाचारी में,
झूठी मुस्कान से खिले चेहरों में,
मैंने साहित्य को देखा है।
कभी अपनों की गद्दारी में,
कभी परायों की वफ़ादारी में,
कच्ची डोर में झूलते रिश्तों में,
कर्ज़े में डूबी मकान की किश्तों में,
मैंने साहित्य को देखा है।
कभी प्रकृति की सुरम्य वादियों में,
कभी गगन से बरसी नदियों में,
कभी उजली-काली शांत रातों में,

चबूतरों पर होने वाली बूढ़ी बातों में,
मैंने साहित्य को देखा है।
पिता के झुके कन्धों में,
माँ के चेहरे की झुर्रियों में,
कभी औलाद के भूलते फ़र्ज़ में,
तो कभी उठते हाथों की अर्ज में,
मैंने साहित्य को देखा है।
फटी कम्बल से झांकते मुरझाये तन में,
कभी शरशैया पर सोकर बिंधे हुये घायल मन में,
कभी सड़कों पर इंतज़ार करते मरे हुए शरीर में,
कभी अस्पताल में पड़े मृत प्रायः पीर में,
मैंने साहित्य को देखा है।
कभी लहराते हुए तिरंगे में,
कभी लहू से रंगी वर्दी में,
कभी देशभक्ति की गर्मी में,
कभी सीमा पर ठिठुरती सर्दी में,
मैंने साहित्य को देखा है।
कभी माथे पर ताज की तरह चढ़ते हुए,
जीवन की नींव में पाहन-से गढ़ते हुए,
कहीं पाठशाला में नन्ह हाथों में पढ़ते हुए,
तो कभी सड़क पर रद्दी के भाव बिकते हुए,
मैंने साहित्य को देखा है।
कभी विरह तो कभी प्रेम में तड़पते हुए,
कभी पतझड़ में भी उसे महकते हुए,
कभी सपनों के फटे बिस्तरों पर सोते हुए,
दिन में हँसकर रात को कभी रोते हुए,
मैंने साहित्य को देखा है।
कभी पुरस्कारों की होड़ में लड़ते हुए,
कभी मंचों पर दौड़ में चढ़ते हुये,
वृद्ध क़लम के सुबकते मुखड़ों में,
कभी पीले काग़ज़ों के टुकड़ों में,
मैंने साहित्य को देखा है।
मीरा, मीर, गालिब, कबीर,
रहिमन, तुलसी, वाल्मिकी,
वेदव्यास, जिनवाणी, गीता,
बाइबिल, कुरान, गुरुग्रंथों में,
शांत पड़े दोहों में,
मौन हुई चौपाइयों में,
उदास पड़ी शायरियों में और
ज़ंजीरों में बन्धी-सी
धर्म की सच्चाइयों में....
मैंने साहित्य को देखा है।

प्रमोद बाफना
झालावाड़ (राजस्थान)

राष्ट्रभाषा है हिन्दी

संस्कृत है जननी तो यह लाडली है नंदनी,
सबको समेटे हुए है अपने में यह बंदनी।
मन में मेरे भी भाव है इसके लिए वंदनीय,
संस्कृत है जननी....।।

माँ की डांट और दादी की है ये कहानी,
बात आज सबको हिन्दी की है बतानी।
संस्कृत है जननी....।।
देश की समृद्धि और गौरव की गाथा है हिन्दी,
मेरे मन की उदासी में फूटी एक आशा है हिन्दी।
संस्कृत है जननी....।।
कवियों के माथे पर चमकता टीका है हिन्दी,
सूर के सुरों को जिसमें गूंथा, वो भाषा है हिन्दी।
संस्कृत है जननी....।।

मीरा के विष में अमृत-सी बसी उम्मीद है हिन्दी,
तुलसी के छन्दों की पहचान का प्रतीक है हिन्दी।
संस्कृत है जननी....।।
सुंदर, सरल, मीठी और अनमोल है हिन्दी,
रस, अलंकार और छंद का भंडार है हिन्दी।
संस्कृत है जननी....।।
निज भाषा ही नहीं, राजभाषा राष्ट्रभाषा है हिन्दी,
हमारा मान-अभिमान और निज गौरव है हिन्दी।
संस्कृत है जननी....।।

मातृभाषा है तू

ममतामयी, कालजयी भाषा है तू,
समस्त वसुंधरा की आशा है तू।
दिया आशीष वो सुदास दिवोदासा है तू,
शौरसेनी अर्धमागधी की परिभाषा है तू।
ममतामयी....।।
वेदों से प्रकटी मृदुभाषा है तू,
शारदे के स्वर की परिभाषा है तू।
जग का गुरुर और अभिलाषा है तू,
ममतामयी....।।
मीरा, तुलसी और सूर का तू सार है,
निराला, पंत, प्रसाद का तुझ पर अधिकार है।
तेरे छन्दों के रस से काव्य सृजन हुआ,
देख अलंकारिता, मानव प्रसन्न हुआ।
ममतामयी....।।
भारतेंदु, प्रसाद और शुक्ल का नवसार है तू,
छाया, रहस्य, प्रयोग का नवाचार है तू।
मेरे मन के नीरस कोने का विस्तार है तू,
चाइना, रशिया में श्लोकों का प्रसार है तू।
ममतामयी....।।

प्रेरणा सद्रे

इंदौर (मध्य प्रदंश)

अहसास हिन्दी का

अपनों के बीच जो बोली जाती है, वो है हिन्दी,
अपनेपन का जो अहसास कराती है, वो है हिन्दी।

जहाँ व्याकरण की मार न हो, वो है हिन्दी,
सरलता, सहजता जिसमें झलकती, वो है हिन्दी।

जात-पात, ऊँच-नीच का जिसमें हो न भाव,
हर धर्म के व्यक्ति के पास इसका न हो अभाव।

जब विचार और अभिव्यक्ति को हो दर्शाना,
तब हिन्दी ही एकमात्र भाव, यही कहे ज़माना।

देश को जीवित रखे सदा यही हिन्दी,
मन में जो जोश को बढ़ाए वो है हिन्दी।

हरिवंश राय जी, प्रेमचंद जी और
महादेवी जी की रचनाओं में जागृत है,
एक-दो पंक्ति जिनकी हृदय को आहत है।

देश का भविष्य और देशद्रोही दमन से,
हर बात जो दिल तक पहुँचे वो हिन्दी से।

अहसासों और निश्चयों से भरपूर होती है,
हिन्दी तो हमारी मातृभाषा कहलाती है।

जन-जन तक जो स्वच्छता का हल्ला मचा रही,
भारतवासियों के दिलों में वो स्वच्छता जगा रही।

हिन्दी का बदलता स्वरूप

भारतीय संस्कृति खोती जा रही है,
दोस्तो, हिंदी विलुप्त होती जा रही है।

पापा तो 'पॉप' हो गए,
और मम्मी तो 'मॉम' हो गई।

तभी तो हृदय से आभास,
रिश्तों से दूर हो गए।

लंच और डिनर सब फॉर्मल हो गए हैं,
तभी खाने की प्रकृति भी बेजान हो गई है।

हाय और बाय का रिवाज जो चल गया,
आदमी, आदमी से बहुत दूर हो गया।

पैर छूने को जो टच फीट कर दिया,
तो अपनी रीढ़ को नाजुक कर दिया।

भारत माता और जय हिन्द का नारा लगाओ मित्रों,
अपने मन में देशभक्ति को जगाओ मित्रों।

हिन्दी न होगी, तो विलुप्त होगी संस्कृति,
न होगी कोई भाषा, न होगी शुद्ध कृति।

मातृभाषा को माँ की तरह अमर
बनाना है,
भारतमाता की तरह हिन्दी से प्यार जताना है।

पुखराज छाजेड़
जयपुर (राजस्थान)

हिन्दी

हिन्दी मेरी आत्मा, हिन्दी मन का चैन,
हिन्दी की भक्ति करूँ, दिल से दिन औ रैन।

हिन्दी के गुण गाऊँ सदा, हिन्दी सुख की खान,
हिन्दी से होता हमें, निज गौरव का भान।

दशों दिशाएं गूँजे सदा, हिन्दी के व्याख्यान,
माँ भारती स्वयं करे, हिन्दी का सम्मान।

हिन्दी के पालक हुए, एक से एक महान,
कर प्रणाम करूँ उनका, हिन्दी संग गुणगान।

हिन्दी की सेवा

कबीर, तुलसी, रैदास, सूर,
सरसैया, रहीम, मीरा, रसखान,
भूषण, बिहारी, वृन्द, मुंशी,
भारतेंदु, द्विवेदी, हरिऔध, महान।

प्रसाद, निराला, मैथिली, शुक्ल,
पंत, महादेवी, सुभद्रा, सिरमोड़,
माखन, विवेकानंद, गाँधी, रविन्द्र,
दिनकर जी सबमें बेजोड़।

बच्चन, रेणु, कमलेश्वर, अज्ञेय,
सोहन, सुमन और भगवती,
सिया, जैनेन्द्र, दुष्यंत, नीरज,
अटल, भवानी, भारती।

उन्नायक हुए अनेक
मातृभाषा के भाल के,
कुमार-पंवार ने रखा है
जिसे अद्‌भुत सम्भाल के।
जिसे अद्‌भुत सम्भाल के।।

आज वर दे माँ शारदे,
भर दे भक्ति का मेवा,
तन-मन-धन औ प्राण से,
मैं कर सकूं हिन्दी की सेवा।
मैं कर सकूं हिन्दी की सेवा।।

राजेश कुमार शर्मा 'पुरोहित'
भवानी मंडी (राजस्थान)

हिन्दी

आओ करें सृजन मिलकर हिन्दी में,
छंद गीत नाव रोज़ लिखें हिन्दी में।
सूर कबीर ने साहित्य रचा हिन्दी में,
हम भी लिखना सीखें अब हिन्दी में।
गद्य-पद्य में लिखें जो सार्थक हो,
नई विधाओं को रचें हम हिन्दी में।
अंग्रेज़ियत का मोह त्याग दें हम,
और बोलें सारे मिलकर हिन्दी में।
ख़ूब बोल चुके किट-पिट अंग्रेज़ी,
अब तो क़लम चलाएं हिन्दी में।
विश्व जिसे स्वीकार चुका अब,
और बोला हुँकार भरें हिन्दी में।
अब तो घर-घर अलख जगाएं,
गर्व करें और लिखें हम हिन्दी में।
डूब जाते हैं भक्ति में कान्हा की,
वो पद रचे थे मीरा ने हिन्दी में।
कबीर की साखियाँ याद करो,
जो लिख डाली कबीर ने हिन्दी में।
सब कवियों ने हिन्दी को अपनाया,
आत्मानंद मिला था हिन्दी में।

पहचान है हिन्दी

हिन्दी भाषा नहीं केवल,
ये स्वदेश की पहचान है।
हिन्दी से ही हमको आशा,
हिन्दी हमारी शान है।
हिन्दी में रचे सारे ग्रंथ हैं,
प्रवचन देते हिन्दी में संत है।
हिन्दी जन-जन की भाषा है,
संस्कृत की बेटी हिन्दी।
हम सबकी आशा है,
गर्व करें हिन्दी पर हम।
हम हिन्दी भाषी हैं,
बोलियाँ कई हैं इसकी।
भिन्न-भिन्न प्रान्तों में,
मगर एक हमारी हिन्दी है।
उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम,
सबने बोली हिन्दी है।
देवनागरी लिपि प्यारी,
सबसे लगती प्यारी है।
स्वर व्यंजन में विभक्त,
लगती हिन्दी प्यारी है।।

रवि रश्मि 'अनुभूति'
(दिल्ली)

हिन्दी है संस्कृति

हिन्दी है हिंद के माथे की बिंदी,
हिन्दी हिंद के सम्मान की हिन्दी।
हिन्दी में ही बसती है जान,
हिन्दी है सबके भावों की हिन्दी।।
हिन्दी ही है सम्मान हमारा,
हिन्दी ही है गौरव हमारा।
हिन्दी में ही सब काम करेंगे,
हिन्दी का हम सदा मान करेंगे।।
हिन्दी है संस्कृति हमारी,
हिन्दी है सभ्यता हमारी।
हिन्दी हमें सम्मान सिखाए,
हिन्दी एकता की अलख जगाए।।
हिन्दी है भाईचारा बढ़ाती,
एक-दूजे का मान बढ़ाती।
हिन्दी भारत की है भाषा,
हिन्दी प्यार की परिभाषा।।
हिन्दी बिन अधूरा ज्ञान हमारा,
हिन्दी का है समृद्ध भंडार।
हिन्दी बोलने का नारा हमारा,
हिन्दी बोलने का वादा हमारा।।

अरविंद ताम्रकार 'सपना'
शिवनी (मध्य प्रदेश)

हिन्दी हमारी मातृभाषा

हिन्दी हमारी मातृभाषा और देश हिन्दुस्तान है,
जाने है इसी से विश्व हमको, और यही अभिमान है।

सोने जैसी शुद्धता और चांदी जैसी शुभ्रता है इसमें,
सागर जैसी विशालता और गंगा जी-सी निर्मलता है इसमें।

माँ की ममता-सी मीठी व उसी के आँचल-सी सुरक्षा है इसमें,
करुणा, दया और सरसता के, निर्झर झरने झरते हैं इसमें।

हृदय को छूती हुई भाषा है ये, ज्ञान का भंडार है,
छंद, अलंकार, दोहा, सोरठा का विशाल अम्बार है।

तीन प्रकार के रेफ(आधा र) हैं और मस्ते बिन्दी शृंगार है,
अल्प विराम और पूर्ण विराम, इसके प्रिय परिधान हैं।

जिह्वा, कंठ व अधरों से होता अलग उच्चारण है,
मृदुलता, सरलता, सजगता इसके विशेष गुण कारण हैं।

आत्मोन्नति में सहायक है, ये हिंदी भाषा हमारी,
इसकी उन्नति में बाधक कारणों का, करेंगे हम निवारण हैं।

सुषमा दुबे
इंदौर (मध्य प्रदेश)

हिन्दी को बस जाने दो

खेतों में खलिहानों में,
सागर में तूफ़ानों में,
पर्वत और चिनारों में,
घरों में गलियारों में,
बातों और तरानों में,
महफ़िल में वीरानों में,
गीतों में सुनसानों में,
धड़कन में सबकी साँसों में,
चंदा और सितारों में-
दरों और दीवारों में,
हर एक की मुस्कानों में
गालों में रुखसारों में,
हिन्दी को बस जाने दो।
हर एक मन की तानों में।।

तृप्ति तोमर
इंदौर (मध्य प्रदेश)

मातृभाषा हिन्दी

हिन्दी कहते हैं जिसे हमारी मातृभाषा,
जो है भारत देश की परिभाषा।।

हिन्दी है हमारे परिचय का प्रतीक,
हिन्दी है हमारे दिल के नज़दीक।।

हिन्दी से मिली हिन्दुस्तान को पहचान।
हिन्दी को मिला पूरे विश्व में सम्मान।।

हिन्दी है भाषाओं की जननी।
इसलिए कहते इसे मातृभाषा।।

हिन्दी में है अनेक भिन्नता।
इसके बाद भी दिखती इसमें समानता।।

क्या ख़ूब कहा है- हिन्दी हैं हम,
वतन है हिन्दोस्तां हमारा।।
सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।।

टीना जैन

खेखाडा (राजस्थान)

हिन्दी के प्रति मेरी दीवानगी है

हिन्दी मेरे कण कण में है।
मेरी चूड़ियों की खन-खन में है।
मेरी पायल की छम-छम में है।
मेरे हर वचन में है।
मेरे हर क़दम में है।
आँख खुली,
हिन्दी को अपने सिरहाने पाया।
मैंने तो अपना विषय ही
हिन्दी को बनाया।
हिन्दी तरंगमयी है,
सुरामयी है,
माँ के दूध के साथ ही
हिन्दी मेरे मुख में समायी है।
हिन्दी मुझे भाती है,
अपनी-सी लगती है।
हिन्दी लहराती है,
मुझे गुदगुदाती है।
जब मैं बोलती हूँ,
शब्दों को तोलती हूँ,
हिन्दी मेरे वचनो की
प्राण बन जाती है।
हिन्दी में श्रद्धा है, आस्था है,
विश्वास है, एक आस है।

हिन्दी ही मुझे मेरे ईश्वर से मिलाती है।
यह मात्र शब्दों का ताना-बाना नहीं,
हिन्दी के प्रति मेरी सच्ची श्रद्धा है।
मेरी आँख बंद है, मन कह रहा है,
हाथ लिख रहा है।
यही...
यही, 'हिन्दी के प्रति मेरी दीवानगी है।'

वासिफ़ काजी
इंदौर (मध्य प्रदेश)

राष्ट्र भाषा की महिमा

भारत माता के गौरव को,
फिर से वापस लाना है।

इस धरती, इस आँगन में,
हिंदी को सम्मान दिलाना है।।

अंग्रेज़ी के बढ़ते क़दमों पर,
अब हमको रोक लगाना है।।

हिंदी बसी है साँसों में अपनी,
यह दुनिया को दिखलाना है।।

अपने वतन में खोया हुआ,
वो अधिकार दिलाना है।।

विचारों के इस धर्मयुद्ध में,
हिंदी को ही जिताना है।।

विजयलक्ष्मी जांगिड़

जयपुर (राजस्थान)

मेरा प्रिय विषय है हिंदी

मेरा प्रिय विषय है हिंदी,
है ज्ञान की ये कालिंदी।
हो इतिहास या विज्ञान,
हिंदी का सबको अवदान।।

प्रीत मीरा की इसने जानी,
राधा के संग भई दीवानी।
तुलसी के प्राणों का मान,
सूर का है रचन-विहान।
भारतेन्दु, बने दिनकर भान,
माँ भारती की सुंदर बिंदी।

मेरा प्रिय विषय है हिंदी।
है ज्ञान की ये कालिंदी।।

जो भी इसके पास है आया,
प्रेम से इसने यूँ अपनाया।
संस्कृत अपनी माते मान,
उर्दू, बांग्ला में बसती जान।

देशी बोलियाँ इसकी शान,
मिलकर सबसे बनी ये हिंदी।

मेरा प्रिय विषय है हिंदी।
है ज्ञान की ये कालिंदी।।

कुसुम सोगानी

इंदौर (मध्य प्रदेश)

वांछा और विनती

हे स्वतंत्र भारत के शासन...

है ललाट पर बिंदी हिन्दी,
तो सम्मान दिलाओ न,
स्वभाषा मुकुट बनाओ न।

हे सरस्वती मातानुकरण...

असह्य हो रही है अवहेलना,
भाषा को संबल दिलवाओ न,
कीर्ति पताका फहराओ न।

हे प्राकृत संस्कृत के धारक...

बहुधर्म परक भारत को,
बहुभाषा ज्ञान अथक है,
सहोदरी भाषा हिन्दी को,
उच्च स्थान दिलाओ न।

हे वेद पुराण जनित सज्जन...

सरकार-कार्य में हिन्दी हो,
माध्यम शिक्षा का हिन्दी हो,
मंत्री संतरी के भाषण में,
अनिवार्य हिन्दी करवाओ न।

सर्वोच्च पदों के हे धारक...

तुम करता-धरता शासन के,
राम-रहीम, वीर देशना जपुजी
के पालनहारी हो तो
उसका अधिकार तो छीनो न,
हिन्दी का मान बढ़ाओ न।

हे शुभ्रवासिनी के ज्ञायक...

कितनी भी भाषाएं सीख,

उसकी नहीं मनाही हो,
आवश्यक पर हिन्दी हो,
उसमें ही सुनवाई हो,
देश में अपनी बोली का,
जग में झंडी फहराओ न।

हे राजनीति के अनुचालक...

चाहे जितनी भाषा स्वैच्छिक,
हो विदेशी या इंग्लिश पैतृक,
हिन्दी भाषा हो अधिकारिक,
अब न हो मुद्दा वैचारिक,
हिन्दी को करो पराई न,
स्वभाषा मान बढ़ाओ न।

नवयुग में अपनी भाषा का,
परचम लहराना होगा,
नहीं देश, बल्कि विदेश में,
भी लहराना होगा,
अपितु किन्तु-परन्तु से,
भाषा का सत्कार न होगा,
ऐलान हिन्दी भाषा का,
भारत भाषा ही करना होगा।

हिन्दी पे मोहर लगाओ न,
निज से निज में ही क्षमता है,
पर को मत अपनाओ न,
भारत भाषा करवाओ न।।

मनोज कुमार सामरिया 'मनु'
जयपुर (राजस्थान)

आदिकालीन राजाओं की वीरगाथाओं का जयघोष है हिन्दी।
बिसलदेव, पृथ्वीराज, परमाल जैसे रासो काव्य का उद्घोष है हिन्दी।।

राजपूताने के कुम्भा, सांगा प्रताप जैसे रणबाँकुरों का जोश है हिन्दी।
पदमाकर के प्रकृति प्रेम वर्णन में डूबकर मदहोश है हिन्दी।।

नानक, कबीर, सूर और तुलसी के मानस की भक्तिधार है हिन्दी।
रीतिकाल के कवियों का साहित्य को दिया श्रृंगार है हिन्दी।।

अज्ञेय के विचारों की सुनसान गलियों में भटकती बयार है हिन्दी।
निराला की पीड़ा, मीरा के आँसुओं में छलकता प्यार है हिन्दी।।

चाँदनी रात में जायसी के पद्मावत के सौन्दर्य का खुमार है हिन्दी।
घनानन्द के प्रेम की पीर से नर्म छूअन ले बहती बहार है हिन्दी।।

भारतेन्दु, प्रतापनारायण द्वारा जन के मन में पनपाया उत्साह है हिन्दी।
दिनकर, मैथिलि, श्यामनारायण के ओज का बहता प्रवाह है हिन्दी।।

अपनों द्वारा ही उपेक्षा की पीड़ा से पीड़ित प्रत्यक्ष गवाह है हिन्दी।
अपने ही राष्ट्र में राष्ट्रभाषा पद के लिए तरसती आह है हिन्दी।।

भारत को ज्वलन्त उज्ज्वल भविष्य देने की रीत है हिन्दी।

सच्चे अर्थों में भारतीय संस्कृति की सच्ची जीत है हिन्दी।।

नागार्जुन के दुःख के दुःस्वप्न में जो साथ दे वो मीत है हिन्दी।
तिलक, टैगौर के बेजुबाँ हिन्दुस्तान की जुबाँ का गीत है हिन्दी।।

दादू और रहीम के दोहों में बहता नीति का दरिया है हिन्दी।
गिरधर की कुण्डलियों से समाज को समझने का ज़रिया है हिन्दी।।

गोपालराम गहमरी के रहस्य भरे उपन्यासों से भरपूर है हिन्दी।
देवकीनन्दन कृत चन्द्रकान्ता के तिलिस्म और अय्यारी का नूर है हिन्दी।।

रीतिकाल के कवियों का साहित्य को दिया शृंगार है हिन्दी।
नानक, कबीर, सूर और तुलसी के मानस की भक्तिधार है हिन्दी।।

पराग, चंपक, नन्दन सरीखी बालपत्रिकाओं का आगार है हिन्दी।
बेनीपुरी, शिवपूजन और महादेवी के संस्मरण का भण्डार है हिन्दी।।

पाकर रूप परिनिष्ठित हो रहा है जो स्वप्न साकार है हिन्दी।
हिन्दुस्तान की एकता व अखण्डता का आकार है हिन्दी।।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैलता विस्तार है हिन्दी।
मातृभाषा का एकमात्र पर्याय और भाषिक अधिकार है हिन्दी।।

अंग्रेज़ी भाषा से वैचारिक मुक्ति का प्रखर हथियार है हिन्दी।
विश्व में वृहद जनसमुदाय के हृदय में बसता प्यार है हिन्दी।।

बहिना की राखी, भाई-सा सहयोग और माँ सम दुलार है हिन्दी।
उत्सवों में उत्साह है तो गीतों में मस्ती का मल्हार है हिन्दी।।

रिखबचन्द राँका 'कल्पेश'
जयपुर (राजस्थान)

हिन्दी भाषा की महिमा

चौदह सितम्बर उन्नीस सौ उड़नचास,
का शुभ दिन आया।
राजभाषा का सम्मानित पद,
हिन्दी भाषा ने ही पाया।

चौदह सितम्बर को हिन्दी दिवस,
मनाने का आनन्द आया।
करोड़ों भारतवासियों ने इस,
हिन्दी भाषा को अपनाया।

सरस्वती माँ का आशीष यह पाती,
संस्कृत की पुत्री कहलाती।
संविधान में यह सम्मान पाती,
राजभाषा बनकर इठलाती।

२२ भाषाओं संग हिलमिल रहती,
भाषा भगिनी यह कहलाती।
लिपि इसकी देवनागरी कहलाती,
वैज्ञानिक भाषा से जानी जाती।

हिन्दी भाषी जग में कई हैं क्षेत्र,
स्वर-व्यंजन हैं इसके दो नेत्र।
व्याकरण के अंग हैं इसकी जान,
बोली, भाषा से बढ़ती शान।

हिन्दी पढ़ना-लिखना है आसान,
इस भाषा से राष्ट्र महान।
विदेशों में भी है अलग पहचान,
हिन्दी की बिन्दी में शान।

तुलसी, कबीर, सूर, रसखान, मीरा,
महादेवी ने इसका यश गाया।
पंत, दिनकर, निराला, बच्चन ने,
अपना जीवन सफल बनाया।

हिन्दी भाषा को पावन गंगा,
कहकर इसका मान बढ़ाया।
'रिखब' ने हिन्दी की महिमा गाकर,
चरणों में निशदिन शीश झुकाया।

शरद कौरव 'गम्भीर'
जयपुर (राजस्थान)

माँ हिन्दी का विलाप

सुनो न प्यारे भारतवासी!
क्यूँ अब मुझे भुलाते तुम,
जिस दिन तुम इस जग में आए,
आनन खोल के मुझे बुलाए,
जन्म से चलकर मृत्यु तक,
मुझे जुबां पर साथ ही पाए,
मुनियों ने जब ये ग्रंथ गढ़े,
हिन्दी के नाम से मुझे पढ़े,
फिर क्यूँ मुझको ठुकराते तुम।
सुनो न प्यारे भारतवासी!
क्यूँ अब मुझे भुलाते तुम।।

पुरातनी मेरा इतिहास,
गंगा-यमुना में मेरा वास,
संगीत से लेकर ग़ज़लों तक,
लेखक से लेकर कवियों तक,
फिर क्यूँ मुझको आज़माते तुम।
सुनो न प्यारे भारतवासी!
क्यूं अब मुझे भुलाते तुम।।

मातृभाषा प्रेरणा

हर जन को अब स्वदेश प्रेम होना चाहिए,
हिन्दी का जन-मन में वेश होना चाहिए।

अनपढ़ हो, शिक्षित हो या कोई दीक्षित हो,
बच्चा हो, युवा हो या बुजुर्ग की जुबां हो, डांट हो, फटकार हो,

या चाहे ललकार हो, आन हो, बान हो या चाहे शान हो,
हर युवा पर हिन्दी का वेश होना चाहिए।

हर जन को अब स्वदेश प्रेम होना चाहिए,
हिन्दी का जन-मन में वेश होना चाहिए।

मैया की बात हो या बापू की डांट हो,
विजय हो, पराजय हो या धर्म का साथ हो,

बोली बुंदेली हो, चाहे बघेली हो,
मातृभाषा का हमको बोध होना चाहिए।

हर जन को अब स्वदेश प्रेम होना चाहिए,
हिन्दी का जन-मन में वेश होना चाहिए।।

डॉ. सरिता नारायण
(पटना, बिहार)

मैं हिन्दी

मैं हिन्दी,
मैं गंगा-सी,
निर्मल, शीतल, मधुर,
हिमालय की ऊँचाई से
समुन्दर की गहराई तक,
मेरा वास।

ब्रजभाषा से निकली मैं,
तुलसीकृत रामायण में समाई मैं,
अनगिनत विद्वानों ने,
अपनाया मुझे प्यार से,
मुझे सजाया-संवारा,
मैं खिल-खिल गई,
हाँ, मैं हिन्दी हूँ।

न विदेशी हवा
मुझे बुझा पाई,
न देशद्रोहियों की चली।

सदियों पुरानी जड़ हैं मेरी,
कुछ चापलूस क़िस्म के लोगों ने
चाहा काटना, मरोड़ना,
दो सौ वर्षों तक
मैं और सबल होकर निकली।

मैं शिशु के मुख से निकला प्रथम शब्द,
मैं प्रथम संवाद हूँ,
कुछ ऐसे लोग भी आए,
जिन्होंने मुझे
संवारा
छंद और अंलकारों से
और
मैं संवर उठी,
राष्ट्रभाषा होने का गौरव मिला।

लम्बी है यात्रा मेरी,
पथरीले, कँटीले रास्ते हैं,

कितनी भाषाएं समा गई मुझमें,
फिर भी मैंने अपना मूल स्वरूप
नहीं छोड़ा,
मैं निरन्तर बह रही हूँ।

कभी-कभी रंग बदल जाते हैं,
कुछ उलझन भी आती हैं,
बिना किसी की परवाह किए
मैं बहती रहती,
चाहने वाले
लगाते मुझे अपने माथे पर,
पवित्र करती मैं उन्हें,
मैं जल हूँ, मैं भाषा हूँ।

मैं अनमोल हूँ,
फिर सागर से मिल,
मैं दूर-दूर देश जाती
फैल जाती सारे संसार में।
मैं हिन्दी हूँ,
तुम्हारे जीवन का आधार,
देश का सम्मान,
हाँ, मैं हिन्दी हूँ।

उनके बारे में क्या कहूँ!
जिन्हें मैंने तो अपनाया,
पर,
उन्होंने हमेशा मेरा तिरस्कार किया,
मैं हिली नहीं,
इन्तज़ार है उस सुबह का
जब सारे भारतवासी,
गर्व से अपनाएंगे मुझे,
हाँ, मैं हिन्दी हूँ...॥

हिन्दी मातृभाषा

हमारा आधार 'हिन्दी',
हमारा गौरव 'हिन्दी',
हमारा सम्मान 'हिन्दी',
भावों की अभिव्यक्ति का
उत्तम परिधान 'हिन्दी',
हमारे आस्तिव का विस्तार 'हिन्दी',
भावों का संसार 'हिन्दी',
कर हिन्दी का सम्मान।

दीपा जायसवाल
उज्जैन

हिन्दी (हमारी संवेदना)

वेदनाएं संवेदनाएं बह रही हैं जैसे रग-रग में।
परम शक्ति है विद्यमान, धरा के हर एक कण-कण में।
जीवंत राष्ट्र भारत विशाल, संस्कृति की धरोहर है।
हिंदुस्तान की जान बसी है, हिन्दी के ही स्वर-स्वर में।।

राष्ट्रभाषा गुरूर मेरा, गौरव, इसका अद्भुत अनुपम।
सुंदर, स्वतंत्र, स्वच्छंद है, कोमल इसकी लय-ताल-रिदम।
मातृभाषा हिंदी बहती अविरल निरंतर अथाह सघन।
भारत माता की शान है पहचान है ये हिन्दी अमर।।

मान बढ़ेगा इसका जब हम, मुकुट इसे पहनाएंगे।
हिन्दी उत्थान से भारत की, नई तस्वीर बनाएंगे।
देश और दुनिया से पहले, ख़ुद को भी समझाएंगे।
हिन्दी से ही बने हैं हम, बस हिन्दी ही अपनाएंगे।।

हिन्दी (मेरा अभिमान)

देश रंगीला रंग लाएगा, घुली मिठास है हिन्दी में।
हिंदुस्ताँ का चित्रण वर्णन, दर्शन साक्ष्य हो हिन्दी में।

आत्मीयता भर जाती है, अपनेपन का संचार सरल।
आदान-प्रदान विचारों का, भावों का गर हो हिन्दी में।

बुलंद देश तस्वीर बुलंद, प्रचार बुलंद गर हो जाए।
पहचाने नाम से लोग तुम्हें, वह हस्ताक्षर हो हिन्दी में।

घर-घर बाजे शहनाई, मृदंग, संगीत लहरिया बहती है।
घुल-मिल बैठे रिश्ते-नाते, आदर-सत्कार हो हिन्दी में।

जब-जब हमने साहित्य गढ़ा, सुर-ताल रचा है हिन्दी में।
शिक्षा, आचार-विचार संस्कृति हुई पल्लवित हिन्दी में।

चढ़ा तिरंगा तन शहीद पर, देश-प्रेम की कथा चली।
बलिदानी को सम्मान मिले, जब राष्ट्रगान हो हिन्दी में।

डॉ. प्रीति सुराना

(मध्य प्रदेश)

पुकारती है भारती

जागो देशप्रेमियों
पुकारती है भारती,
माँ है धरा हिन्द की ये
भान होना चाहिए,
माता के सपूतों आज
दांव लगी माँ की लाज,
कौन-सा कर्त्तव्य बड़ा
ज्ञान होना चाहिए,
होश और जोश भरा
लक्ष्य एक बना डालो,
जिह्वा पर राष्ट्र का ही
गान होना चाहिए,
राष्ट्रभाषा का सम्मान
पाने की है अधिकारी,
हिन्दी मातृभाषा पर
मान होना चाहिए,....

मातृभाषा

ककहरा सीखे बिना
कोई बोली बोल सके,
राज़ कोई ऐसा हो तो
हमें भी बताइये।
कोई ग्रंथ कोई वेद
किसी बोली या भाषा का,
उच्चारण वर्णों बिना
हमें भी सिखाइये।
यदि नहीं होता ऐसा
देश या विदेश में तो,
कलह की बात क्या है
बात मान जाइये।
प्रेम वाली भाषा को ही
दिलों में बसाया जाये,
मातृभाषा को ही अब
मान भी दिलाइये।

अभियान

माथे का तिलक बने हिन्दी,
हिन्दी है अभिमान।
हर बोली को अपनाती है,
हिन्दी बड़ी महान।
लेकर प्रण अब तो करना है,
चालू ये अभियान।
राष्ट्रभाषा का हिन्दी को,
दिलवाना है मान।...

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhasha.org

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

कार्यालय -
एस-२०७, इंदौर प्रेस क्लब, म. गां. मार्ग,
इंदौर (मध्यप्रदेश) ४५२००१

संपर्क: (का.) ०७३१-४९७७४५५, (दू.) ७०६७९५५४५५
अणुडाक- matrubhashaa@gmail.com
अंतरताना- www.matrubhashaa.com

मूल्य 100/-

ISBN: 987-93-86716-29-3

के.बी.एस प्रकाशन
kbsprakashan@gmail.com
9871932865, 7532868696,